प. पू. वात्सल्य रत्नाकर

आचार्य विमल सागर विधान

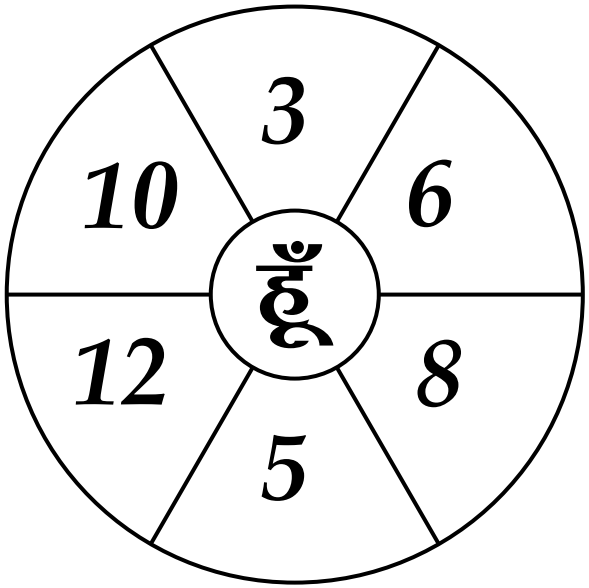

रचयिता : आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

कृति : प. पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर विधान

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम-2018 प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : आ. श्री भक्तिभारती माताजी, ऐ. विदक्ष सागर जी, क्षु. श्री विसोमसागरजी, क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी, ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी, ब्र. आरती दीदी

सम्पर्क सूत्र : 9829127533, 9953877155, 9829076085

प्राप्ति स्थल : 1. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी (हरियाणा)
मो.: 9812502062, 09416888879

2. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली
मो. 09818115971, 09136248971

:: सौजन्य ::

श्रीमान् पवन कुमार जैन,

पुत्र श्री सुधीर जैन-श्रीमति संगीता जैन, पौत्र अभिषेक जैन

2/196 शास्त्री नगर दिल्ली-52 मो. 9810672872, 8076293576

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली

मो.: 9811374961, 9811363613 kavijain1982@gmail.com

मेरी भावना

भक्ति से जीवों के अनन्त कर्म खिर गये।
भक्ति के भाव से कितनों के दिन फिर गये॥
भक्ती का फल विशद वचनातीत है मेरे भाई।
भक्ती की नौका से अनन्त जीव तिर गये॥

प.पू. आचार्य गुरुदेव विमल सागर जी महाराज ने अपने जीवन में अनेक संघर्षों से जूझते हुए मोक्ष मार्ग के राही बनकर संसार में अनेक जीवों को संसार से पार होने का मार्ग प्रशस्त किया उन्होंने मुरैना विद्यालय में अध्ययन करके धर्म के संस्कार प्राप्त किए जिनको सार्थक किया है उत्कृष्ट पद पर पहुँचकर भी वात्सल्य का भाव अपने अन्दर जगाया अत: उनके लिए वात्सल्य रत्नाकर की उपाधि से अलंकृत किया है प.पू., गुरुदेव की समाधि 29 दिसम्बर तीर्थराज सम्मेद शिखर पर हुई उस समय से यह भजन सारे देश में गूँजता है।

उत्तर दिशा का सूरज पूरब में जा समाया,
उपदेश गुरुदेव का रह रह के याद आया॥

ऐसे पू. गुरुदेव की अर्चा के लिए **"वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमल सागर विधान"** बनाने का भाव हुआ जिसके द्वारा भव्य जीव भक्ती रूपी नौका पर आगे बढ़कर "विशद" मोक्ष के राही बनें। इसमें ब्र. सपना दीदी ने आगे आकर कार्य किया उनके लिए आशीर्वाद है।

-आचार्य विशद सागर जी

गुरु वंदना

भक्ती से मुक्ती मिले कहते, करते जग में सन्त।
अल्प समय में भव्यजन, पावें भव का अन्त॥

वर्तमान के सर्वाधिक 190 विधानों के रचयिता **आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज** को तीर्थराज सम्मेद शिखर पर 2 प्रतिमा के व्रत देकर व्रती जीवन की शुरुआत करने वाले **वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमल सागर जी** की तीर्थराज सम्मेद शिखर पर 29 दिसम्बर 1994 में समाधि हुई व्रती जीवन के बढ़ते क्रम में ऐलक व मुनि दीक्षा **गणाचार्य श्री विराग सागर जी** ने प्रदान की। **गणाचार्य श्री विराग सागर जी** की आज्ञा से **मर्यादा शिष्योत्तम आचार्य श्री भरतसागर जी** ने 27 पिच्छीधारी साधुओं के ससंघ सानिध्य में हजारों लोगों के जन समुदाय के बीच आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया उसी समय एक मुनि दीक्षा **मुनि विशाल सागर जी** को व दो क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की। **दादा गुरु विमल सागर जी** के अनन्त उपकारों को याद करते हुए इस वर्ष नजफगढ़ में 29 दिसम्बर को समाधि दिवस के अवसर पर यह विधान हो इस हेतु शीघ्रताशीघ्र गुरुवर ने इस विधान की रचना की सपना दीदी ने कम्पोजिंग कर श्रेष्ठ कार्य किया गुरु चरणों में नमोस्तु-3

-मुनि विशाल सागर

''छत्र छाया दादा गुरु की''

इतिहास में विदित है कि भारतीय वसुन्धरा पर अनेक संतों ने जन्म लिया है अनेक उपसर्गों को सहन किया जिनशासन की प्रभावना की, जैनधर्म की ध्वजा फहराई उसी परम्परा में **'परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमल सागर जी महाराज** ने उत्तरप्रदेश के एटा जिला के ग्राम कोसमा में जन्म लिया जन्म लेते ही दुख के बादल छा गये माँ की मृत्यु हो गई आपने अपने जीवन को बुआ के पास रहकर धर्म संस्कारों से अनुग्रहीत किया अपनी लौकिक पढ़ाई के साथ साथ धार्मिक पढ़ाई की, जगह जगह बच्चों को पाठशाला में पढ़ाकर धर्म का प्रचार किया समय अपनी गति से बढ़ता गया आपने संसार में ना फँसने का निर्णय लिया और ब्रह्मचारी, क्षुल्लक, मुनि, आचार्य पद को ग्रहण कर चारों धाम की यात्रा पूर्ण की आप निमित्त ज्ञानी के नाम से जाने गये कोई दुखिया आपके पास आ जाए तो वह दुखी नहीं रह सकता आपकी करुणा वात्सल्यता के संस्कार आपने अपने संघ में दिए **पू. भरत सागर जी पू. विराग सागर जी**

महाराज के जितने शिष्य हैं सभी में सम्यकदर्शन का एक वात्सल्य गुण सबके पास है गुरुदेव आपके दर्शन तो हम कर नहीं सके पर आपका आशीर्वाद हमेशा मिलता रहे यही भावना है पू. गुरुदेव ने अचानक ही कहा की 29 दिसम्बर समाधि दिवस पर नजफगढ़ में जिसमें कई संतों के साथ गुरुदेव की महाअर्चना होना है नया विधान तैयार करें तुरन्त लिखना शुरू किया ये दादा गुरु की कृपा है जो गुरुदेव की कलम निरन्तर चलती रहती है हमेशा चलती रहे गुरुदेव का जिनको अशीश मिल जाए उसकी चांदी-चांदी है। पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में कोटिशः नमोस्तु।

भोर के सूरज से ये अंधेरे क्या लड़ पायेंगे,
ये वक्त के कदम मेरे साथ क्या चल पायेंगे।
सर पे बांध कफन जिसने सँभाली हो पतवार,
उस कश्ती से भला ये तूफान क्या टकरायेंगे॥

ब्र. सपना दीदी, 9829127533
संघस्थ-प. पू. आचार्य विशद सागर जी महाराज

आचार्य श्री विमल सागर जी की पूजा

स्थापना

दोहा- विमल सिन्धु गुरुदेव ने किया जगत कल्याण।
करते हम गुरुदेव का, निज उर में आह्वान॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनिन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आहवानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तर्ज- पिंजरे के पंछी रे, तेरा दर्द ना जाने कोय

क्षीर सिन्धु का नीर चढ़ाने, रत्न कलश में लाए रे!।
धार तीन देकर चरणों में, जन्म जरा मिट जाय रे!॥
श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे!।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!॥1॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

कह ना सके तू अपनी कहानी, भ्रमण कियो होके अज्ञानी रे!।
चन्दन में केसर घिसकरके, गुरु पद पूजे कोय रे!॥

श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे!।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!।2।।
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल मनोहर, यहाँ चढ़ाने लाए रे !।
भक्ति भाव से पूजा करके, अक्षय पदवी पाए रे !।।
श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे !।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!।3।।
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

रंग बिरंगे पुष्प मनोहर, जो खुशबू फैलाएँ रे!।
गुरु चरणों की अर्चा करके, काम रोग नश जाए रे !।।
श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे !।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!।4।।
ॐ ह्रूँ प. पू आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे शुभ नैवेद्य बनाकर, रजत थाल भर लाए रे!।
किए अर्चना भक्तिभाव से, क्षुधा रोग नश जाए रे !।।

श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे !।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!।5।।
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जगमग दीपक रत्न जड़ित से, गुरु की आरति गाए रे !।
मोह तिमिर जो रहा अनादी, वह भी ना रह पाए रे!।।
श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे !।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!।6।।
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप दशांगी सुरभित लेकर, अग्नि में धूप उड़ाए रे!।
अष्ट कर्म का बोझ रखा जो, विशद शीघ्र जल जाए रे!।।
श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे !।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!।7।।
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल रसदार थाल में, गुरु के चरण चढ़ाए रे!।
गुरुवर के चरणों भक्ती से, मुक्ती फल को पाए रे!।।

श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे !।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!॥8॥
ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु वर, दीप धूप फल लाए रे!।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, पद अनर्घ्य प्रगटाए रे!॥
श्री विमल सिन्धु की रे! पूजा करता जो कोय रे !।
उसके सारे कार्य पूर्ण सब, स्वतः सिद्ध हो जाय रे!॥9॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **शांतिधारा कर मिले, मन में शांति अपार।**
पुष्पांजलिं करते चरण, पाने भव से पार॥
(शान्तये शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- **नाम विमल गुण हैं विमल, विमल रहे ऋषिराज**
जयमाला गाते विशद, जिनके चरणों आज॥

तर्ज- तेरी रस्के.....

विमल सिन्धू चरण, किया शत् शत् नमन,
गुरु आशीष पाया-मजा आ गया।
हमने गाया भजन, विशद होके मगन,
चरणों में सिर झुकाया-मजा आ गया॥1॥
गुरु त्यागी कहे, वीतरागी कहे,
जिनकी महिमा निराली है संसार से।
पग विहारी कहे, निर्विकारी कहे,
दर्श गुरुवर का पाया-मजा आ गया॥2॥
ज्ञान धारी गुरु, ब्रह्मचारी गुरु,
सम्यक्चारित के धारी हैं गुरुवर परम।
तपाचारी कहे, वीर्याचारी रहे,
गुरु उपदेश पाया-मजा आ गया॥3॥
नीर प्रासुक किया, साथ चन्दन लिया,
पाद प्रच्छाल गुरुवर का, हमने किया।
आरती हम लिए, गुरु पूजा किए,
गंधोदक सिर लगाया-मजा आ गया॥4॥

पड़गाहन गुरु का किया, उच्चासन दिया,
पाद प्रच्छालन कर पूजा नमन भी किया।
शुद्धी बोली शुरु-मुद्रा खोली गुरु,
आहार गुरु को कराए-मजा आ गया।।5।।
राग से हीन जो, ज्ञान में लीन जो,
परिग्रह आरम्भ के-पूर्ण त्यागी रहे।
ज्ञान के कोष जो, पूर्ण निर्दोष जो,
"विशद" गुरु हमने पाए-मजा आ गया।। 6।।

दोहा- गुरुवर की अर्चा करें, विनय भाव के साथ।
भव्य जीव वे शीघ्र ही, बनें श्री के नाथ।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **ज्ञान प्रदाता जो रहे, 'विशद' ज्ञान के कोष।**
जिन की अर्चा कर मिले, जीवन में संतोष।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाजंलिं क्षिपेत्।।

आचार्य विमल सागर पूजन विधान

स्थापना

मिलता है सच्चा सुख केवल, गुरुदेव आपके चरणों में।
मेरी विशद कामना है पल-पल, रहे ध्यान आपके चरणों में।
जिह्वा पर गुरु का नाम रहे, गुरु के चरणों विश्राम रहे।
आह्वानन् उर में करते हैं, करें अर्चा गुरु के चरणों में।

ॐ ह्रूँ प.पू.आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्र !अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। विमलोदय छन्द।।

गुरु सम्यक्ज्ञान जलोदधि हैं, बरसाते अमृत नीर अहा।
मैं चातक बनकर चरणों में, अमृत पाने को खड़ा रहा।।
यह भरा कूप से जल पावन, अरु प्रासुक करके लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।।1।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन सम चन्द्र वदन जिनका, जो चन्द्र किरण सम शीतल हैं।
चरणों की रज मलयागिरि है, जिनका आशीष सुमंगल है॥
मैं अन्तर्दाह मिटाने को, गुरु शीतल चन्दन लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।2॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

जिनने अक्षयपुर जाने को, अक्षय संयम को धारा है।
अक्षय विज्ञान जगे उर में, अक्षय संकल्प हमारा है॥
मैं अक्षय पद का अभिलाषी, शुभ अक्षय अक्षत लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।3॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

चैतन्य विपिन के चितरंजक, चेतन के सुमन खिलाते हैं।
निज अन्तर्वास सुवासित कर, गुरु सारा जग महकाते हैं॥
मैं पुष्प पाखुड़ी हाथ लिए, गुरुदेव चरण में आया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।4॥
ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

आनन्द सुधामृत के निर्झर, आनन्द सतत् बरसाते हैं।
जो चेतन के रस कन्द विशद, चेतन की क्षुधा मिटाते हैं॥
चेतन की क्षुधा मिटाने को, यह व्यंजन सरस ले आया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।5॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

सद्ज्ञान किरण से आलोकित, ज्योतिर्मय सारा जग करते।
जो हैं प्रकाश के पुंज विशद!, जीवों का मोह तिमिर हरते॥
मैं मोह तिमिर का नाश करूँ, यह मणिमय दीपक लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।6॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला जलती धूँ धूँ, है अखिल विश्व दुख से व्याकुल।
कब धन्य सुअवसर मिले विशद, नश जाये आतम का कल-मल॥
वसु कर्म नसाने को गुरुवर, यह धूप दशांगी लाया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।7॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

गुरु अखिल विश्व के फल खाए, पर तृप्त नहीं हो पाया हूँ।

मैं शिव मंदिर में वास करूँ, ये भाव बनाकर आया हूँ।।
मैं अभय मोक्षफल पाने को, चरणों में श्रीफल लाया हूँ।।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।।8।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

मैं अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, गुरु चरण चढ़ाने लाया हूँ।
अब मोक्ष मार्ग को पा जाऊँ, मैं अर्चा करने आया हूँ।।
पाने अनर्घ्य पद गुरु पद में, शुभ भाव बनाकर आया हूँ।
गुरु भक्ती की शुभ गंगा में, अवगाहन करने आया हूँ।।9।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **मात कटोरी आपकी, पिता बिहारी लाल।**
जन्म कोसमा में लिए, गाते हम जयमाल।।

तर्ज- गुरु से बढ़कर.....

जाते हैं जो जिनवर के दरबार में।
नहीं भटकते हैं फिर वे संसार में।।टेक।।

जिन भक्ती से पुण्य खजाना मिलता है।
खुशियों का उपवन जीवन में खिलता है।
वह कर्त्तव्य निभाता है व्यवहार में।।नहीं...1।।
जिनवर की भक्ती जो प्राणी पाते हैं।
नर भव पाकर उसको सफल बनाते हैं।।
मोक्ष मार्ग वे पा लेते उपहार में।।नहीं...2।।
मोक्ष मार्ग के नेता गुरु कहलाते हैं।
भवि जीवों को मुक्ती राह दिखाते हैं।।
शिव का दर्शन पाते हैं शाकार में।।नहीं...3।।
जो भी गुरु को अपने हृदय बसाता है।
मानो अपना वह सौभाग्य जगाता है।।
श्रद्धा रखता है जो पद अनगार में।।नहीं...4।।
भक्ती करके हमको मुक्ती पाना है।
कर्म नाशकर केवल ज्ञान जगाना है।।
'विशद' ज्ञानधारी जाता शिव द्वार में।।नहीं...5।।

दोहा- **वात्सल्य रत्नाकर कहे, ज्ञानी गुरु महान।**
जिनकी अर्चा कर मिले, जग को सम्यक्ज्ञान।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **अर्चा करते आपकी विनय भाव के साथ।**
शिव पथ के राही बनें, झुका रहे पद माथ॥
।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम कोष्ठ

दोहा- **पंचाचारी जो हुए, किए जगत कल्याण।**
मरण समाधी प्राप्त कर, पाया शिव सोपान॥
।। अथ प्रथमकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।
।। चौपाई छन्द।।

विमल सिन्धु गुरुवर अनगारी, रहे 'दर्शनाचार्य' के धारी।
श्री गुरुवर पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते॥1॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय दर्शनाचार धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरुवर 'सम्यक्ज्ञानाचारी', परम वीतरागी अनगारी।
श्री गुरुवर पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते॥2॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय ज्ञानाचार धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरुवर सम्यक् चारित पाए, मोक्ष मार्ग के नेता गाए।
श्री गुरुवर पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते॥3॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय चारित्राचार धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादश तप को तपने वाले, कर्म निर्जरा किए निराले।
श्री गुरुवर पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते॥4॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय तपाचार धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरुवर 'वीर्याचार' के धारी, शिवपथ गामी गुरु अनगारी!।
श्री गुरुवर पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते॥5॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय वीर्याचार धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार के धारी गाए, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाए।
श्री गुरुवर पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते॥
ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय पंचाचार धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय कोष्ठ

दोहा- **द्वादश तप धारी हुए, किए तपस्या घोर।**
अनगारी होकर बढ़े, मोक्ष महल की ओर॥

।। अथ द्वितिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(चाल छन्द)

जो विषयाहार को त्यागें, वे अनशन तप में लागें।
श्री गुरुवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥1॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर महाराज अनशन तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप ऊनोदर जो पावें, वह अपने कर्म नशावें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥2॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज ऊनोदर तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्रत परिसंख्यान तपधारी, नित करें निर्जरा भारी।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥3॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज व्रतपरिसंख्यान तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो भिन्न भिन्न रस त्यागी, निज आतम के अनुरागी।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥4॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज रसत्याग तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन विविक्त शय्यासन पावें, निज गुण में रमते जावें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥5॥

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज विविक्त शैयासन तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप काय क्लेश गुरु पाए, मन में जो खेद ना लाए।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥6॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज काय क्लेशतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप प्रायश्चित्त जो धारें, वे अपने दोष निवारें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी॥7॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज प्रायश्चित तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विनय गुणों को पाते, वे ज्ञानी जीव कहाते।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी।।8।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज विनय तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैय्यावृत्ती तप धारी, पावन होते अनगारी।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी।।9।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज वैय्यावृत्ती तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत स्वाध्याय में रहते, उनको शिवगामी कहते।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी।।10।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज स्वाध्यायतप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, संवर कर कर्म नशावें।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी।।11।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज व्युत्सर्ग तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो आतम ध्यान लगाए, वह ध्यान सुतप को पाए।
श्री जिनवर तप के धारी, होते हैं जग उपकारी।।12।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज ध्यान तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पावें गुण सम्यक्त्व के, तप धारें मुनिराज।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, पाते शिवपद राज।।

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज द्वादश तप धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय कोष्ठ

दोहा- **दश धर्मों को धारकर, अपनाया शिवपंथ।**
रत्नाकर वात्सल्य के, हुए जहाँ में संत।।

।। अथ तृतीय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(चौपाई छन्द)

अन्दर में समता उपजाई, क्रोध नहीं जो करते भाई।
उत्तम क्षमा धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी।।1।।

ॐ ह्रूँ उत्तम क्षमा धर्म धारक आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन में अहंकार न लाए, मन में समता भाव जगाए।
मार्दव धर्म हृदय में धारे, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें।।2।।
ॐ ह्रूँ उत्तम मार्दव धर्म धारक आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुटिल भाव मन में न लाए, सरल भाव उर में उपजाए।
आर्जव धर्म हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें।।3।।
ॐ ह्रूँ उत्तम आर्जव धर्म धारक आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसके मन मूर्छा न आए, जो संतोष भाव को पाए।
उत्तम शौच हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें।।4।।
ॐ ह्रूँ उत्तम शौच धर्म धारक आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहें वचन जो मन में होवे, असत् वचन की सत्ता खोवें।
उत्तम सत्य हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें।।5।।
ॐ ह्रूँ उत्तम सत्य धर्म धारक आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्रिय मन जीते दुखदायी, प्राणी रक्षा करते भाई।
वे हैं उत्तम संयम धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी।।6।।
ॐ ह्रूँ उत्तम संयम धर्म धारक आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इच्छाओं को तजने वाले, द्वादश तप को तपने वाले।
वे हैं उत्तम तप के धारी, जन जन के हैं करुणाकारी।।7।।
ॐ ह्रूँ उत्तम तपधर्म धारकाय आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर द्रव्यों से राग हटावें, मन में समता भाव जगावें।
उत्तम त्याग धर्म के धारी, तन मन से होते अविकारी।।8।।
ॐ ह्रूँ उत्तम त्याग धर्म धारक आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

किंचित् मन में राग न होवे, सारी इच्छाओं को खोवे।
वह हैं आकिंचन व्रतधारी, जन जन के हैं करुणाकारी।।9।।
ॐ ह्रूँ उत्तम आकिंचन धर्म धारक आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो हैं काम भोग के त्यागी, परम ब्रह्म के हैं अनुरागी।
वे हैं ब्रह्मचर्य व्रतधारी, जन जन के हैं करुणाकारी।।10।।

ॐ ह्रूँ उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म धारकाय आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चित् चेतन को ध्याने वाले, निज आतम के हैं रखवाले।
उत्तम क्षमा आदि व्रतधारी, मोक्ष महल के हैं अधिकारी।।11।।

ॐ ह्रूँ उत्तम दशधर्म धारकाय आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ कोष्ठ

दोहा- **रत्नत्रय धारी हुए, गुरु त्रय गुप्तीवान।**
पुष्पांजलिं करते यहाँ, करने गुरु गुणगान।।

।। अथ चतुर्थकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

तर्ज-नंदीश्वर पूजा...

हम रागादिक के भाव, दूषण नाश करें।
प्रभु धार समाधी भाव, निज में वास करें।।

हो मनोगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।1।।

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय मनगुप्ति धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तज कर दुर्नय के शब्द, वचन को गुप्त करें।
चेतन में करके वास, सारे दोष हरें।।
हो वचनगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।2।।

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय वचनगुप्ति धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन की चेष्टा का त्याग, स्थिर आसन हो।
हो निज स्वभाव में वास, निज पर शासन हो।।
हो कायगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए ।।3।।

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय कायगुप्ति धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन गुप्ती में मन का गोपन, वचन गुप्ति में शब्द निरोध।
काय गुप्ति में काय रोधकर, प्राणी पावें आतम बोध॥
यही भावना भाते हैं हम, निज स्वभाव में करें रमण।
वीतराग अविकारी बनकर, सब दोषों का करें वमन॥
ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय त्रयगुप्ति धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम कोष्ठ

दोहा- **षट् आवश्यक साधु के, पालें जो निर्दोष।**
लीन रहें निज में सदा, धार हृदय सन्तोष॥

।। अथ पंचमकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

।। शम्भू छन्द।।

तर्ज- हे गुरुवर शाश्वत सुख दर्शक....

'समता' रस को पीने वाले, करुणा रस बरसाते हैं।
विमल सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।1॥
ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय समताआवश्यक धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव 'वन्दना' करने वाले, श्री जिन महिमा गाते हैं।
विमल सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।2॥

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय वन्दनाआवश्यक धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर की 'स्तुति', विशद भाव से गाते हैं।
विमल सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।3॥
ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय स्तुतिआवश्यक धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'प्रतिक्रमण' करके दोषों को, गुरुवर आप नशाते हैं।
विमल सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।4॥
ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय प्रतिक्रमणआवश्यक धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'प्रत्यख्यान' आप करते गुरु, त्याग भाव अपनाते हैं।
विमल सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।5॥
ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय प्रत्याख्यान आवश्यक धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

निज चेतन का 'ध्यान' लगाकर, ममता भाव हटाते हैं।
विमल सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं।6॥
ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय ध्यानावश्यक धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षट् आवश्यक पालन करके, जीवन स्वयं सजाते हैं।
विमल सिन्धु गुरु के चरणों हम, नत हो शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय षट् आवश्यक धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षष्ठम कोष्ठ

दोहा- **वसु विशेष गुण के धनी, कहे गये आचार्य।**
अतः पूजते गुरु चरण, इस जग के सब आर्य॥

।। अथ षष्ठमकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

।। चाल छन्द।।

गुरु पंचाचारी गाए, आचारवान कहलाए।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय आचारवान गुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

आधार वान गुरु गाए, जो सम्यकज्ञान जगाए।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय आधारवान गुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्यवहार वान गुरु ज्ञानी, शिष्यों के हैं कल्याणी।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय व्यवहारवान गुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरु प्रकर्त्तावान कहाए, हितकारी संघ के गाए।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय प्रकर्त्तावान गुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयोपाय दर्शी गुरु गाए, जग को सद् राह दिखाए।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय आयोपाय दर्शि गुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अवपीड़क गुण के धारी, जो रहे कषाय निवारी।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अवपीड़क गुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अपरश्रावी गुण गुरु पाए, शिष्यों के दोष छिपाए।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय अपरश्रावीगुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्यापक गुरु कहलाए, जो मरण समाधी दिलाए।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय निर्यापक गुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

गुण यह विशेष गुरु पाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
जो मोक्ष मार्ग दर्शाते, हम गुरु पद शीश झुकाते।।

ॐ ह्रूँ प. पू. आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय विशेष गुण धारकाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- **दुखियों के दुख मैटकर, करते शांति अपार।**
विमल सिन्धु की हम सभी, करते जय जयकार।।

।। चौबोला छन्द।।

हे गुरू आपके गुरु गुण की, शुभ जयमाला हम गाते हैं।
हम भाव सुमन लेकर आये, सुस्वर संगीत बजाते हैं।।
गुरुदेव आपके चरणों में, हम अर्चा करने आये हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं।।1।।
ग्राम कोसमा उत्तर प्रदेश में, श्री गुरुवर ने जन्म लिया।
पिता बिहारी मात कटोरी, के गृह को गुरु धन्य किया।।
अश्विन कृष्ण सप्तमी सम्वत्, उन्नीस सौ तिहत्तर पाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं।।2।।
मात पिता ने सोच समझकर, नेमिचंद शुभ नाम दिया।
नेमिचंद ने विद्यालय में, आकर के कुछ ज्ञान लिया।।
जैनधर्म की शिक्षा हेतू, नगर मुरैना आये हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं।।3।।
शांती सागर जी गुरुवर ने, यज्ञोपवीत संस्कार किया।
शूद्र के हाथों का जल भोजन, चन्द्र सागर से त्याग दिया।।
बारह व्रत श्री वीर सागर जी, से जाकर गुरु पाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं।।4।।

महावीर कीर्ति से क्षुल्लक दीक्षा, बड़वानी में पायी थी।
आषाढ़ शुक्ल पंचमी सम्वत्,बीस सौ सात सुहाई थी॥
नेमिचंद जी क्षुल्लक बनकर, वृषभ सागर कहलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥5॥
माघ सुदी द्वादशी को संवत्, दो हजार अरु सात महान।
धर्मपुरी में ऐलक दीक्षा, पाए गुरु चरणों में आन॥
ऐलक बन करके गुरुवर जी, सुधर्म सागर कहलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥6॥
फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी शुभ, दो हजार नौ सम्वत् जान।
सिद्ध क्षेत्र सोनागिरि जाकर, मुनिव्रत धारण किए महान॥
परम दिगम्बर मुनिवर बनकर, विमल सागर कहलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥7॥
विक्रम सम्वत् दो हजार और, सत्रह का शुभ दिन आया।
नगर टूण्डला में गुरुवर ने, पद आचार्य शुभम् पाया॥
शिक्षा दीक्षा देने वाले, दुखहर्ता कहलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥8॥
तीर्थ वंदना करके गुरु ने, आतम का उद्धार किया।

भूले भटके भव्य जनों का, गुरुवर ने उपकार किया॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, गुरु अधिकार दिलाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥9॥
पौष कृष्ण द्वादशी सु सम्वत्, बीस सौ इक्यावन आया।
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, मरण समाधी को पाया॥
पट्टाचार्य श्री गुरुवर का, भरत सिन्धु गुरु पाए हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, सादर शीश झुकाए हैं॥10॥

दोहा- **जैन धर्म जिनतीर्थ का, किया 'विशद' उपकार।**
जैनधर्म को प्राप्त कर, हो आतम उद्धार॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विमल सागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **विमल गुणों को प्राप्त कर, हुए विमल आचार्य।**
विमल धर्म को प्राप्त कर, विमल बनूँ अनगार॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री विशद सागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

गौरव गाथा जिनकी गाके, आह्लाद ह्रदय में आता है।
दर्शन करके श्री गुरुदेव का, माथ स्वयं झुक जाता है।।
जिन शासन के मार्ग प्रभावक, विशद सिन्धु है इनका नाम।
ह्रदय कमल में आह्वानन कर, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्रः! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठः ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! संसारताप विध्वसनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! कामरोग विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।5।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वं स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।6।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।7।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।8।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।9।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा जो करें, पावें शांती अपार।
शिव पद के राही बनें, होवें भव से पार।।

॥ शान्तये शान्तिधारा ॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जावें निर्मूल।।

जयमाला

दोहा- जयमाला गुरु आपकी, शब्दों में ना आय।
मोती सिन्धु के कभी, कोई क्या? गिन पाय।।

(वीर छन्द)

क्षमामूर्ति हे गुरुवर तुमने, शिव पथ किया गमन है।
कर्म श्रृंखला को संयम से, तुमने किया समन है।।
पाकर के आदर्श आपके, यह जग हुआ चमन है।

ऐसे गुरुवर विशद सिन्धु पद, बारम्बार नमन है।।1।।
विशद सिन्धु जी इस जगती को, विशद बनाने वाले हैं।
वात्सल्य के रत्नाकर में, कमल खिलाने वाले हैं।।
वर्णन करना कठिन गुरु, शिवराह दिलाने वाले हैं।
मोह तिमिर से मोहित जग में, दीप जलाने वाले हैं।।2।।
विशद सिन्धु से झर-झर झरती, विशद गुणों की धारा है।
विशद सिन्धु ने संयम द्वारा, खोला शिव का द्वारा है।।
भक्तों ने यह जीवन अपना, किया समर्पित सारा है।
तुमरे गुण गाना हे गुरुवर! यह अधिकार हमारा है।।3।।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, पञ्चेन्द्रिय जयवान कहे।
षट् आवश्यक पालन करते, पञ्चाचारी आप रहे।।
दश धर्मों को धारण करते, द्वादश तप धारी ऋषिराज।
गुरु आपकी अर्चा करता, तीन योग से सकल समाज।।4।।

दोहा- पूजा की है आपकी, भक्ति भाव के साथ।
चरण शरण में आपकी, झुका रहा मैं माथ।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।
विशद भाव से आज हम, करते चरण प्रणाम।।

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत ॥

आरती आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज

आज करें हम विमल सिन्धु की, आरति मंगलकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, गुरुवर के दरबार।।
हो गुरुवर हम सब उतारे तेरी आरती ....
पिता बिहारी लाल आपके, मात कटोरी बाई।
ग्राम कोसमा जन्म लिया हैं, जन-जन को सुखदायी।।
हो गुरुवर हम सब उतारे तेरी आरती ....
पंच महाव्रत तुमने धारे, रत्नत्रय को पाया।
पंच समीती गुत्ती पाकर, निज का ध्यान लगाया।।
हो गुरुवर हम सब उतारे तेरी आरती ....
छह आवश्यक पाने वाले, धर्म ध्वजा के धारी।
वीतराग निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, जन-जन के उपकारी।।
हो गुरुवर हम सब उतारे तेरी आरती ....
सोनागिर पर दीक्षा पाकर, निज स्वरूप को पाए।
पद आचार्य टूण्डला पाकर, शुभ सन्मार्ग दिखाए।।
हो गुरुवर हम सब उतारे तेरी आरती ....
वीर निर्वाण पच्चीस सौ इकतिस, तीर्थराज पर आवे।
नश्वर देह छोड़कर स्वामी, 'विशद' समाधी पाए।।
हो गुरुवर हम सब उतारे तेरी आरती ....
मोक्ष मार्ग पर बढ़कर हम भी, जीवन सफल बनाएँ।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महाफल पाएँ।।
हो गुरुवर हम सब उतारे तेरी आरती ....